International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-2, Issue-1 February- 2015
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

दूरदर्शन चैनल के कार्यक्रमों के प्रति मेरठ के शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन

बबीता पुण्डीर डा0 प्रशनजीत कुमार
सी0 पी0 ई0 सिसौली
मेरठ

सार

इस शोध अध्ययन का उद्ेष्य दूरदर्षन चैनल पर प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति मेरठ जिले के षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन कना हैं। इस उद्ेष्य की प्राप्ति के लिए मेरठ जिले के 100 षहरी क्षेत्र के तथा 100 ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक न्यायदर्ष के रूप में चुने गये। शोधकर्ता ने केवल उन्ही अभिभावकों को चुना जिनके घर में सैटेलाइट कनेक्षन था। सभी अभिभावकों से 30 प्रष्नों वाली निर्धारण मापनी भरवाई गई। ऑकड़ो का विष्लेशण करने पर यह निश्कर्श प्राप्त हुआ कि दूरदर्शन चैनल के लगभग सभी प्रकार के कार्यक्रमों के प्रति षहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के अभिभावकों का दृश्टिकोण सकारात्मक है। परन्तु षहरी अभिभावकों का दृश्टिकोण ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है। परन्तु षहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

प्रस्तावना :–

जीवन में मानव को अनेक प्रकार की चिन्ताओं एवं कठिनाईयों से जूझना पड़ता है। सम्पूर्ण मानव जीवन संघर्शों की कहानी कहता प्रतीत होता है। संघर्शों और चिन्ताओं के बीच में भी रहकर मनुश्य कुछ क्षण इनको भूलकर बिताना चाहता है, मन की प्रसन्नता और कार्य क्षमता की वृद्वि के लिए मनोरंजन अत्यन्त आवश्यक भी है। वास्तव में मनोरंजन थके हुए मन–मस्तिश्क को नई स्फूर्ति प्रदान करता है। आदि काल से मानव अपने मनोरंजन के लिए भिन्न–भिन्न साधनों का आश्रय लेता चला आ रहा है। आधुनिक युग में उपग्रह चैनलों के प्रसारण मनोरंजन का सर्वाधिक प्रचलित एंव लोकप्रिय साधन बन गया है। वर्तमान संसार में जब से **सेटेलाइट (उपग्रह)** का युग षुरू हुआ है तब से सचांर के क्षेत्र में अदभुत क्रॅाति आ गई है। कहा जा सकता है कि दुनिया सिमट कर **ग्लोबल विलेज (गांव)** हो गई है मनोरंजन जीवन की एक अभूतपूर्व आवश्यकता है। दूरदर्षन चैनल पर प्रसारित होने वाली कार्यक्रम मनोरंजन के साथ साथ सूचनाओं की प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन है। आज षहरी ही नही बल्कि ग्रामीण क्षेत्र भी उपग्रह चैनलों द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों का पूरा लाभ उठाकर विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सक्रियता निभा रहे हैं। जहॅा एक ओर, विभिन्न उपग्रह चैनल अनेक क्षेत्रों जैसे–मनोरंजन, षिक्षा, आर्थिक, राजनैतिक, खेलकूद, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित जानकारियॉ प्रदान करते हैं, समय और स्वास्थ्य की हानि के साथ–साथ इसके प्रभाव से मस्तिश्क पर कुप्रभाव पड़ता हैं।

दूरदर्शन का नाम सुनते ही अतीत के खट्टे–मीठे अनुभव याद आने लगते है। चित्रहार, हमलोग, तमस, रामायण और महाभारत जैसे कार्यक्रमों ने टेलीविजन को न सिर्फ करोडो लोगो के बीच लोकप्रिय बनाया बल्कि देष मे इसे एक प्रभावषाली माध्यम के रूप मे भी स्थापित किया। सत्तर के दष्क के मध्य मे टेलीविजन का नाम दूरदर्षन रखा गया। टेलीविजन केद्रो से प्रसारण और कार्यक्रम षुरू होने से पहले बजाई जाने वाली धुन से लोग भावनात्मक रूप से जुड गए थे और दूरदर्षन से मिलने वाली तरह–तरह की जानकारी का हमारे व्यक्तित्व पर स्थायी और गहरा प्रभाव पडा था। हैदरावाद में हाल में आयोजित विश्व बैडमिन्टन चैपियनषिप की षानदार कवरेज के लिए न सिर्फ खेलप्रेमियों बल्कि इसमें भाग लेने वाले देशी–विदेशी खिलाडियों से भी दूरदर्षन को वाहवाही मिली। भारत की षान जैसे रियलिटी शो से दर्षकों को सुरीली संगीत सुनने का अवसर प्राप्त होता है। इसके अलावा दर्षकों को अन्य टेलीविजन चैनलों की तरह रियलिटी शो के दौरान कार्यक्रम पेष करने वाली हस्तियों के बीच बेकार की नोक झोंक भी नही झेलनी पडती है। जलसा कार्यक्रम की सर्वाधिक रेंटिंग है।

विभिन्न उपग्रह चैनलो का अर्थ उन टीवी चैनलों से है जिनके माध्यम से टीवी पर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है, जैसे दूरदर्षन, स्टार चैनल, जी0टी0वी0, सोनी टी0वी0, ड़िस्कवरी चैनल आदि।

पहला निजी स्वामित्व वाला भारतीय चैनल जी0टी0वी0 था। कुछ साल बाद सी0एन0एन0, डिस्कवरी, नेषनल ज्योग्रोफिक चैनल की षुरूआत हुई। सन् 2001 में एच0बी0ओ0, हिस्ट्री चैनल, और नेषनल चैनल के कुछ अन्य चैनल भारतवर्श में षुरू किये गये।

सन् 1980 में भारतीय सिनेमा के छोटे परदे पर प्रोग्राम षुरू हुये तब सिर्फ एक ही चैनल दूरदर्षन था। जिस पर सरकारी नियंत्रण था। इसके माध्यम लोग रामायण, महाभारत जैसे धार्मिक ग्रन्थों तथा विभिन्न ऐतिहासिक कथाओं से परिचित हुये। कुछ समय बाद राश्ट्रीय व क्षेत्रीय चैनलों (डी0डी0–2, मैट्रो चैनलों) को खोला गया।

भारत में दूरदर्षन का पहला केन्द्र नई दिल्ली में 15 सितम्बर, 1956 में प्रारम्भ हुआ। धीरे–धीरे वर्श 1963 में दूरदर्षन के कार्यक्रमों में नियमितता आई। सन् 1975–76 में साइट कार्यक्रम के अंतर्गत उपग्रह प्रसारण का सफल परीक्षण किया गया। सन् 1983 में इनसेट–1बी का सफल प्रेक्षपण हुआ जो वरदान सिद्व हुआ। इस वर्श देष में 45 ट्रांसमीटरों द्वारा केन्द्रों की स्थापना हुई। देष की 28 प्रतिषत जनसंख्या तक दूरदर्षन सीधे पहुँचा। इस समय ही रंगीन टेलीविजन का प्रसारण आरम्भ हुआ और राश्ट्रीय कार्यक्रमों की नींव डली तथा दूरदर्षन धीरे–धीरे देष की आधी जनसंख्या तक पहुँच गया।

17 सितम्बर, 1984 को दिल्ली में तथा 1 मई, 1985 को बम्बई में दूसरे चैनल का आरम्भ हुआ। विदेषी टेलीविजन कार्यक्रमों की प्रतिस्पर्धा ने भारतीय दूरदर्षन को भी प्रभावित किया और केबिल युग का प्रारम्भ हुआ।

केंबिल टी0वी0 की खोज एक इलेक्ट्रानिक के0 डिलर द्वार पेन्सिलवानिया नामक ग्राम में हुई। भारत मे केबिल नेटवर्क द्वारा स्टारप्लस, सोनी, जी0टी0वी0, जी0मूविज, यू0टी0वी0, कलर्स, हंगामा, इमेंजिन, टेन स्पोर्ट, कार्टून नेटवर्क, ई0एस0पी0एन0, सी0एन0एन0, बी0बी0सी0, डिस्कवरी, आजतक, एन0डी0टी0वी0, जी0न्यूज, इंडिया टी0वी0, स्टार स्पोर्ट, एच0बी0ओ0, सहारा, सी0बी0सी0 आवाज, नेषनल ज्योग्राफी, आदि 100 से भी अधिक चैनलों का प्रसारण होता है जिनके द्वारा हम मनोरंजन कर सकते है और विष्व की घटनाओं से क्षणभर में परिचित हो सकते हैं।

विभिन्न प्रकार के आविश्कार तथा उसके प्रयोग से जहाँ मनुश्य को कई तरह से लाभ हुये है वही मनुश्य आलसी और विलासिता पूर्ण जीवन बिताने का आदि होता जा रहा हैं। चैनलों के कार्यक्रम अधिक देखने के कारण लोग मनोरंजन के लिए खेत खलियानों व मैदानों में न जाकर चैनल कार्यक्रमों तक सीमित हो गये हैं, बालकों में बीमारियां जैसे–ऑखो की रोषनी कम होना, भूख न लगना, मानसिकता पर पड़ने वाले गलत प्रभाव आदि बढने लगी हैं। नैतिक मूल्य व सामाजिकता का हनन होने लगा हैं।

पूरे विष्व में लगभग 1000 से अधिक उपग्रह संचार के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उपग्रह तकनीकी से संचार के माध्यम को व्यापक करने में बहुत सहयोग प्राप्त हुआ है। इसकी व्यापकता के साथ ही इसके समर्थन तथा विरोध में स्वर उठने लगे हैं। इसीलिए विभिन्न उपग्रह कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करने की आवष्यकता महसूस हुई कि उपग्रह कार्यक्रम वास्तव में लाभप्रद है या हानिकारक।

शोध समस्या के उद्देष्यः

1. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'मनोरंजक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'षैक्षिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'आर्थिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'राजनैतिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. दूरदर्शन चैनल पर प्रसारित 'खेल–कूद क्षेत्र के कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-2, Issue-1 February- 2015 ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना:

1. दूरदर्शन चैनल के 'मनोरंजक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. दूरदर्शन चैनल के 'षैक्षिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. दूरदर्शन चैनल के 'आर्थिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
4. दूरदर्शन चैनल के 'राजनैतिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
5. दूरदर्शन चैनल के 'सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।
6. दूरदर्शन चैनल के 'खेल कूद क्षेत्र के कार्यक्रमों' के प्रति शहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध समस्या की परिसीमाएॅ

यह शोध कार्य मेरठ जिले के नगर क्षेत्र के 100 अभिभावको तथा मेरठ जिले के ग्रामीण क्षेत्र के (ग्राम सिसौली) के 100 अभिभावको तक सीमित है।

विधि तंत्र:

विधि:– प्रस्तुत शोध समस्या का समाधान करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यायादर्ष :– प्रस्तुत षोध कार्य के लिए न्यायादर्ष का चयन लाटरी विधि या ेऋपउचसम त्ंदकवउ डमजीवकद्ध द्वारा किया गया है। षोधकर्ता ने मेरठ जिले के षहरी क्षेत्र के 100 अभिभावको तथा ग्रामीण क्षेत्र के 100 अभिभावको का चयन लाटरी विधि द्वारा किया। केवल उन्ही अभिभावको का चयन किया गया जिनके धर पर सैटेलाइट कनेक्षन लगा था।

उपकरण:– उपरोक्त उद्देष्यो की प्राप्ति कि लिए षोधकर्ता ने निर्धारण मापनी का प्रयोग किया। जिसमे मनोरंजक, षैक्षिक, आर्थिक, खेल कूद, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्रो से सबधित कथनो को सम्मिलित किया गया। प्रत्येक क्षेत्र के 5 प्रष्न थे।

साख्यिकीय प्राविधियॉ :– एकत्रित प्रदत्तो का विष्लेशण करने के लिए निम्न साख्यिकीय प्राविधियॉ का प्रयोग किया गया।

1 मध्यमान ;डद्धः दोनो समूहों के विभिन्न उपग्रह चैनलो के कार्यक्रमो के प्रति अभ्भिावको के दृश्टिकोणों के सख्यात्मक मानो का मध्यमान ज्ञान करने के लिए।

2 मानक विचलन ेऋक्द्धः विभिन्न क्षेत्रो मे दोनो समूहो के प्राप्ताको का विचलन ज्ञात करने के लिए।

3 क्रान्तिक अनुपात ;ब्त्द्धरू दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जॉच करने के लिए।

इस षोध कार्य से सबंघित आकडे एकत्र करने के लिए 30 कथनो की 200 निर्धारण मापनियो के मेरठ जिले के नगर व ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावको से भरवाया। तथा कथनो के फलाकों को जोडकर उनका योग ज्ञात किया जो अभिभावको का विभिन्न उपग्रह चैनलो के कार्यक्रमों के प्रति दृश्टिकोणों का प्राप्तांक है। इस प्रकार सभी 100 षहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति दिये गये उत्तरो के आधार पर प्राप्तअको का मध्यमान एवं मानक विचलन निकाला। अन्त में षहरी तथा ग्रामीण अभिभावकों के विभिन्न कार्यक्रमों के प्राप्तांकों के माध्यमानों के बीच पाये जाने वाले अन्तर की सार्थकता की जाचॅ करने के लिए ज. जमेज का प्रयोग किया गया। आकडो के विष्लेशण से प्राप्त निश्कर्श निम्न सारणी के अन्तर्गत प्रस्तुत है–

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-2, Issue-1 February- 2015 ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

दूरदर्शन चैनल के कार्यक्रमों के प्रति मेरठ के षहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सख्या	विभिन्न कार्यक्रम	100शहरी अभिभावकों		100 ग्रामीण अभिभावकों		क्रान्तिक अनुपात ;ब्त्द्ध	निष्कर्श
		मघ्यमान	मानक विचलन	मघ्यमान	मानक विचलन		
1	मनोरंजक कार्यक्रम	22.05	4.42	21.30	3.57	1.32	असार्थक
2	शैक्षिक कार्यक्रम	22.41	2.92	21.55	1.75	2.53	"
3	आर्थिक कार्यक्रम	22.62	2.64	21.73	2.37	2.51	"
4	राजनैतिक कार्यक्रम	20.19	4.80	18.41	3.82	2.90	"
5	सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रम	20.08	3.05	18.51	5.56	2.48	"
6	खेल–कूद कार्यक्रम	22.20	2.46	21.37	3.03	3.54	"

उपरोक्त सारणी से स्पश्ट है कि किसी भी क्षेत्र में षहरी व ग्रामीण अभिभावको के प्राप्ताको का मघ्यमान 18 से ऊपर है। अतः सभी कार्यक्रमो के प्रति अभिभावको का सकारात्मक दृश्टिकोण है।

सारणी मे दिये गये प्राप्ताको का विवरण निम्न प्रकार है।

1. **मनोरंजक कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणः–**

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि षहरी अभिभावकों का मनोरंजक कार्यक्रमों के प्रति मध्यमान (22.05), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (21.30) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गई तो पाया कि यह अन्तर सार्थक नही हैं।

2. **शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों के दृश्टिकोणः–**

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि शहरी अभिभावकों का षैक्षिक कार्यक्रमों के प्रति किये गये निश्कर्शों का मध्यमान (22.41), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (21.55) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर यह अन्तर सार्थक नही पाया गया। अर्थात् दोनों अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

3. **आर्थिक कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों का दृश्टिकोणः–**

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि शहरी अभिभावकों का आर्थिक कार्यक्रमों के प्रति किये गये निश्कर्शों का मध्यमान (22.62), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (21.73) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर यह अन्तर सार्थक नही पाया गया। अर्थात् दोनों अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. **राजनैतिक कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों का दृश्टिकोणः–**

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि शहरी अभिभावकों का राजनैतिक कार्यक्रमों के प्रति किये गये निश्कर्शों का मध्यमान (20.19), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (18.41) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर यह अन्तर सार्थक नही पाया गया। अर्थात् दोनों अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

5. **सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों का दृश्टिकोणः–**

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि षहरी अभिभावकों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के प्रति किये गये निश्कर्शों का मध्यमान (20.08), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (18.51) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर

अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर यह अन्तर सार्थक नही पाया गया। अर्थात् दोनों अभिभावकों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों के प्रति दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

6. खेल–कूद क्षेत्र के कार्यक्रमों के प्रति शहरी एवं ग्रामीण अभिभावकों का दृश्टिकोणः–

आंकड़ों के विष्लेशण के आधार पर यह निश्कर्श निकलता है कि शहरी अभिभावकों का खेल–कूद क्षेत्र के कार्यक्रमों के प्रति किये गये निश्कर्शों का मध्यमान (22.20), ग्रामीण अभिभावकों के मध्यमान (21.32) से अधिक आया किन्तु जब 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने पर यह अन्तर सार्थक नही पाया गया। अर्थात् दोनों अभिभावकों का खेल–कूद क्षेत्र के कार्यक्रमों के प्रति दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

निश्कर्शः–

सम्पूर्ण आंकड़ों का विष्लेशण करने के बाद यह कहा जा सकता है कि दूरदर्शन चैनल के लगभग सभी कार्यक्रमों के प्रति षहरी अभिभावकों का मध्यमान ग्रामीण अभिभावकों की तुलना में अधिक है। परन्तु षहरी एवं ग्रामीण दोनों अभिभावकों के दृश्टिकोणों में कोई सार्थक अन्तर नही है। षहरी एवं ग्रामीण दोनों अभिभावकों का दृश्टिकोण सकारात्मक है। फिर भी षहरी अभिभावकों का विभिन्न कार्यक्रमों के प्रति दृश्टिकोण ग्रामीण अभिभावकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भटनागर और भटनागर "शिक्षा अनुसन्धान", लायल बुक डिपो, मेरठ।
2. श्राय, पारसनाथ "अनुसन्धान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल अस्पताल मार्ग आगरा।
3. गुप्त, एस0पी0 "सांख्यिकी विधियाँ", शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. क्ला, एस0एन0 "सांख्यिकी के सिद्धान्त" साहित्य भवन, आगरा।
5. रत्तू के0के0 सूचना तंत्र एवं प्रसारण माध्यम।
6. बुच, एम0बी0 "फिफ्थ सर्वे आफ एजूकेषनल रिसर्च"।
7. अरूण कुमार "अनुसन्धान की विधियॉ", आई0 पी0 एच0, मेरठ।
8. डॉ0 आर0 ए0 शर्मा "अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी",लायल बुक डिपो, मेरठ।
9. डॉ0 आर0 ए0 शर्मा "छात्र का विकास एवं शिक्षण",लायल बुक डिपो, मेरठ।
10. सुखिया ए0पी0 एण्ड मेहरोत्रा शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
11. एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना "शिक्षण की तकनीकी",लायल बुक डिपो, मेरठ।
12. डॉ0 आर0 ए0 षर्मा "मानसिक मापन एवे मूल्यांकन",लायल बुक डिपो, मेरठ।
13. बी0 एल0 शर्मा "प्रारम्भिक शिक्षा लायल बुक डिपो, मेरठ।
14. डॉ0 आर0 ए0 शर्मा "शिक्षा एवं मनोविज्ञान मे मापन एवं मूल्यांकन", लायल बुक डिपो, मेरठ।
15. पत्र–पत्रिकाएं इण्डिया टुडे, प्रतियोगिता दर्पण, दैनिक जागरण, टी0वी0, अमर उजाला, हिन्दुस्तान दैनिक आदि।